संक्षिप्त शोध सार

शोधार्थी: शशि किरन यादव
शोध निदेशक: प्रो. कहकशाँ एहसान साद
हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली
ई-मेल: skiranyadav24@gmail.com

Notification no.: COE/Ph.D/(Notification)/498/2021
Notification date: 27-08-2021

शोध विषय: बीसवीं सदी के अंतिम दशक का यथार्थ और स्त्री उपन्यास लेखन

प्रस्तुत शोध प्रबंध 'बीसवीं सदी के अंतिम दशक का यथार्थ और स्त्री उपन्यास लेखन' बीसवीं सदी के अंतिम दौर में हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों के लेखन में समकालीन प्रवृत्तियों, घटनाओं के अध्ययन से संबंधित है। लेखिकाओं ने अनिश्चितता, असमानता और संदेह को सृजन के सकारात्मक पहलुओं से जोड़कर सामाजिक यथार्थ को व्यक्त किया है। इस सदी का स्त्री उपन्यास लेखन स्त्री मुक्ति, स्त्री समानता, स्त्री के

अधिकारों के संदर्भ में एक गंभीर चिंतन को व्यापक धरातल प्रदान करता है।

नब्बे के दशको में जीवन मूल्यों में बड़ी तेजी से बदलाव देखने को मिलता है। इक्कीसवीं सदी के निर्धारण में इस परिवर्तन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्त्री समस्या का स्त्री द्वारा ही अभिव्यक्त किया जाना इस दशक की रचनाशीलता की मुख्य विशेषता है। लेखिकाओं ने उन अनसुलझे सवालों को भी बेबाकी से अपने लेखन में उठाया जिन पर लिखना या तो आवश्यक नहीं समझा गया था या फिर उन पर लिखने का जोखिम किसी ने नहीं उठाना चाहा। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण स्त्री अपनी अस्मिता को लेकर सजग दिखती है। तो वही दूसरी ओर राजनीति में भी वह सक्रिय भागीदारी करती है। इस दशक में स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता में तेजी आई। इसी कारण इस दशक में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श को बल मिला वहीं दूसरी ओर आदिवासी स्त्रियों ने भी लेखन द्वारा आदिवासी अस्मिता को बल प्रदान किया।

इस कालखंड विशेष में लिखे गए उपन्यासों का उद्देश्य 'स्त्री की अस्मिता' को प्रतिष्ठित करना रहा है। स्त्री विमर्श पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाता हुआ, स्त्री की स्वतंत्रता, समानता की मांग करता है। नब्बे के दशक का मध्य वर्ग जहाँ वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति और

साम्प्रदायिकता जैसी परिस्थितियों से जूझ रहा था। वही दूसरी ओर वह आर्थिक रूप से संपन्न भी हो रहा था। उपन्यासो के माध्यम से उसी यथार्थ का शोध में विश्लेषण किया गया है। उपन्यासों में सांप्रदायिकता के मुद्दे को उठाते हुए धर्मनिरपेक्ष संस्कृति को पुनः सशक्त ढंग से स्थापित करने का प्रयास किया गया है। उपन्यासो में विकल्प की तलाश के साथ-साथ समस्या के मूल कारणों को भी उद्घाटित करने का प्रयास उपन्यासकार ने किया है।

सदी के अंतिम दशक में स्त्रियों द्वारा लिखित उपन्यासों में एक ऐसी स्त्री की छवि उभर कर आती है जो अपना परिचय स्वयं बनना चाहती है, किसी पुरुष के परिचय पर निर्भर नहीं रहना चाहती और वे अपनी अस्मिता को स्थापित करने के लिए तत्पर दिखाई देती है। स्त्री मुक्ति का सपना और इसकी चुनौतियां इस दशक के उपन्यासों का मूल बिंदु है। आज की नारी अपने समसामयिक परिवेश के प्रति सचेत है, फिर वह सामाजिक हो या राजनीतिक, धार्मिक हो या सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति हो या फिर मनोवैज्ञानिक। सदी के अंतिम दशक की रचनाओं में यथार्थ का आग्रह दिखाई देता है।